Acc no 6552
ग्
891.43
S 31 J

Jal Bhulan
by
Sri Ram

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जलझूलन

श्रीमत् सीतारामचन्द्र चरण कमल के भ्रमर
श्री महाराज कुमार रसिक रामकिशोर शर-
ण बाबू नन्दकिशोर दुबे रचित

जिस में

श्री लड़ैतीलाल जनक नन्दिनी दशरथ राजकुमार
परम रसखान के जलझूलन की लीला वर्णन है
भक्त जनों के आनन्द विलास हेत

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यंत्रालय में मुद्रित पूर्वक छपा

जूलाई सन् १८७९ ई०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6552

Price R. /4/ =

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

SRI
No 3134
JAMMOO
6552.

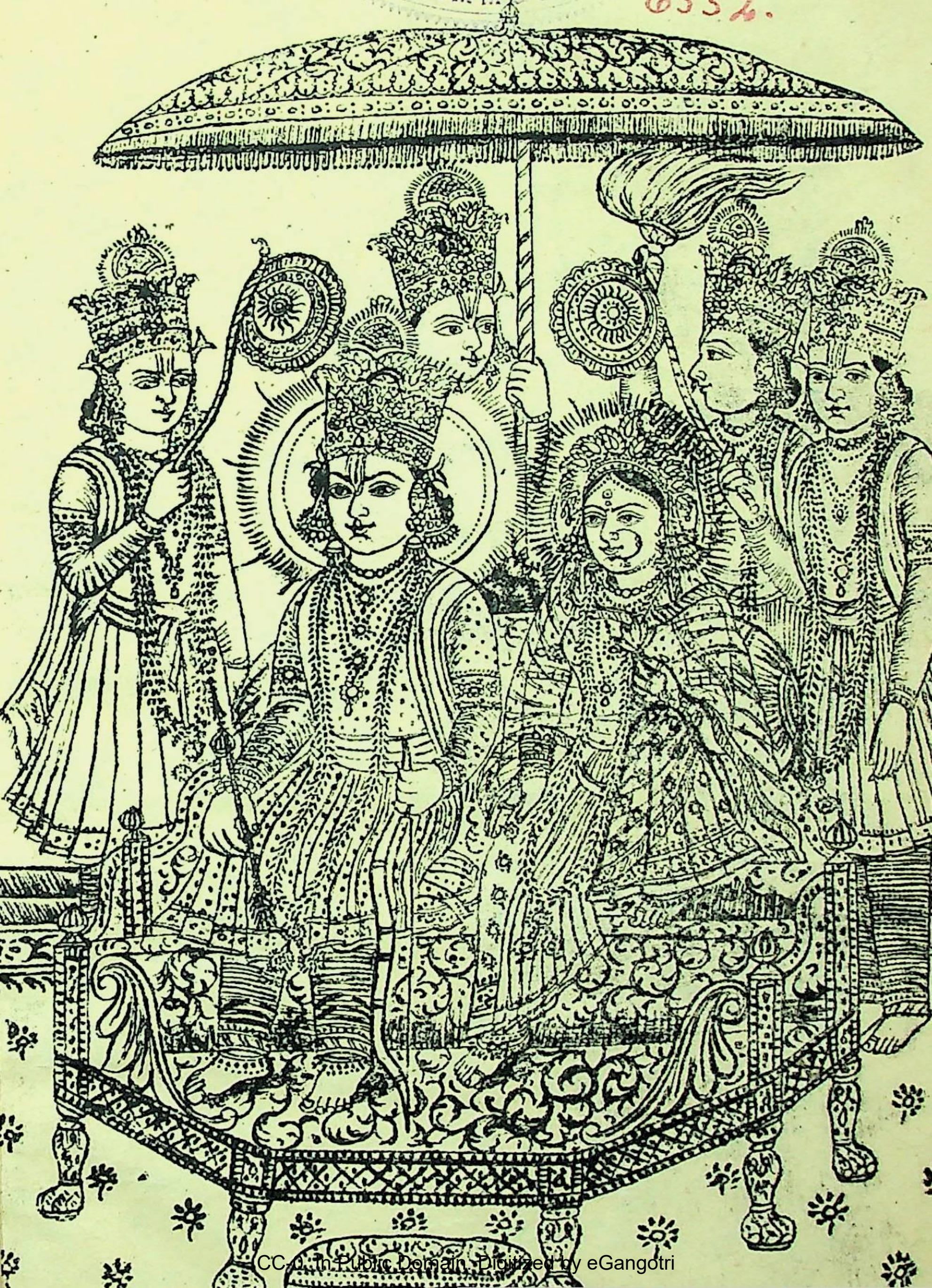

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशायनमः

अथजलभूलन

वस्तु निर्देशात्मक

मंगलम् ॥

॥ श्री आनन्दकंद सिय रघुनन्दनाय नमः ॥ रोलाछंद
॥ सिद्धि जयति श्री जनक नन्दिनी वर रघुनन्दन ॥ ना-
म रूपलीला सुधाम अनुपम छबि बन्दन ॥ जयति
भरत श्रीलाल लषण वरजयति शत्रुहन ॥ जै केशरी
किशोर चारुशीलादि सखय गन ॥ १॥ जय सहजा
सुभगादि सहचरी प्रभा प्रकासी ॥ जय प्रिय राज
कुमारि सिद्धि आदिक रति रासी ॥ जय परिकर जय
अवध जयति श्री अवध निवासी ॥ जय गणपति
शिव शिवा ब्रह्म सरस्वती प्रकासी ॥ २॥ जय वशिष्ठ
मुनि आदि सिद्धि श्रीराम दास गुर ॥ जयति जानकी
दास रसिक तपपुञ्ज महीसुर ॥ सन्त जयति करुणा
अनन्त जै चारि खानकर ॥ मो हिय सिय पिय बस-
हि नित्य वर देहु कृपाकर ॥ ३ ॥ फल निर्देशात्मक मंग-
ल ॥ जयति लषण अभिराम काम छबि धाममनो-
हर ॥ सखन शिरोमणि रसिक राम बल्लभ दृगनो-
हर ॥ करुणा निधि सरकार पतित पावन अघतारे ॥
आयो अघ सिरताज आजहरि बिरद सम्हारे ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पद पंकज अनकूल सदा रुजमूल निकन्दन ॥ बि-
नवों दीन अधीन बसहिं उरपुर रघुनन्दन ॥ शोभा
छवि सुखधाम भरत श्री लषण शत्रुहन ॥ रामचन्द्र
मुखचन्द्र हर्षित करिये आनंद घन ॥ ५ ॥ दोहा ॥
आप नाथ निष्काम प्रिय मैं सकाम सनाम ॥ समु-
झि बिरद सुनि आपनो करगहि लीजिय राम ॥१॥
सबहिं नचावत स्वबस करि लिये आपकरतार ॥ मेरी
सब मनसा करो पूरी प्राण अधार ॥ २॥ तारे पतित
अनेक प्रभु मो सम मिलो न एक ॥ कलिमल रुजहरि
हरि मिलो सुनौ बिरद बर टेक ॥३॥ सुनत टेर गज
द्रौपदी लिय प्रह्लाद निबेर ॥ मेरी भारी अरज सुनि
कहाँ लगाई बेर ॥४ ॥ प्रभु गवरो कहाय अब कासों
याचों आय ॥ हरि कलेश रुज दूरिकरि सब सुख
देहु मिलाय ॥५॥ श्री हनुमत गुरु कृपा निधि
विश्वनाथ अवतार ॥ उर संपुट सियपिय बसें द-
या दृष्टि करतार ॥ ६॥ उमा शम्भु करुणा अयन
त्रिभुवन यश परिपूरि ॥ सियाराम उरपुर बसें करहु
दूरि दुख सूरि ॥७॥ विश्वनाथ दायाऽभराम लीजै
हरि दुख फन्द ॥ नन्द किशोर चकोर इव लखैराम
मुखचन्द ॥८॥ आति आरत बिनवों बहुरि जिनहिं
रामपद नेह ॥ कछु बिहार बरणन करों परिपूरित
करि देहु ॥९॥ बीज मधुर ध्वनि सरसगुन हावभा
व अनुकूल ॥ रसिक शिरोमणि आदरहिं लहैं
सदा सुखमूल ॥१०॥ कलि प्रपंच दिन धादि गो
चिन्ता इकनिशि कीन ॥ कृपा सिंधु रघुवंशमणि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

स्वपनतोंल लवलीन ॥२१॥ कृपारोंच लागहुसदा मन निजरूप विचार ॥ सुजन आदरहिंगे रचहु लीलारस श्रृंगार ॥२२॥ बूड़त आनंदसिंधु लखि लघणवझो निरधारि ॥ जलभूलन रचनारचौ लाहुसुखद फलचारि॥ ॥२३॥ रसनमध्य रसराजप्रिय रसश्रृंगार विचार ॥ रवराम सिय जासुनित्य पूरोनित्य विहार ॥२४॥ सो आयसुलहिकहन कछु रघुपति रीतमति धारि ॥ संत रसिकजन कविकथा लेहैंसकल सुधारि ॥२५॥ अथ प्रारम्भ ॥ श्रीमच्छ्रय राघवायनमः ॥ दोहा ॥ भादोंसित एकादशी समय सुहावनजानि ॥ रामसिया गुनमनिसजे सरस अनूपम बानि ॥२६॥ जलज नयन उरबाहुवर रतन अनूपममाल दिव्यवसन भूषणाअयन लसन मनोहरचाल ॥२७॥ कहकहों छबि आजकी रतिपति कोटिनवारि ॥ रसतनित्य साकेतमें छविअनन्त सिंगारि ॥२८॥ जनकलली रघुनाथ छवि शोभाराज समाज ॥ सखीसखा ऋतुमंडली मध्यम नहुं ऋतुराज ॥२९॥ भूषण बसन अनूपछवि परिकर माहविभाम ॥ जनुतारा गणमध्यमें पूरणचन्द्र प्रकाश ॥३०॥ हरिगीतछन्द ॥ सजिसाज ताजसमाज ससिरघुराज सिय अनुपमलसे ॥ जनुलड़ित गगनमें श्यामघन छहैं छटा धनुशरकसे ॥ अतिमधुर कलरव करत भूषणगानपर झलकानकी ॥ झप्यान झिलमिल झालरें झलमलैंशोभा भानकी ॥३१॥ वरछत्र चामर दरतगण कविको कहै उपमानको ॥ रचि चोवदार नक़ीबबोलत बंदिविरद विधान को ॥ सुखलसत श्रमसीकर सलोने कहिन सुरदमा जातिहै ॥ जनुभये मालिक रसविवस असकहत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हम सकुचाति हैं ॥२॥ रविरुचि सुगंधन देतबीरी क-
हत शीरीं बात हैं ॥ सुचि विविधि सुलि परिहास बा-
नी मन्दमन्द मुसुकात हैं ॥ गावत परस्पर सखि सखा
सुख देत आनंद कंद को ॥ बसिहोत कोन विलोकि
छवि सियसहित दशरथ नन्दको ॥३॥ दोहा ॥
विविध बधूटी सखीगन नाचत विविधि विधान ॥
गुनमनि तृपित न होत हिय पुनिपुनि करत बखान
॥४॥ रागकाफी ॥ दशरथ राजलला श्री जनक
किशोरी हो ॥ जलभूलन हितलाल लियोचित
चोरी हो ॥ सखा सखिन की भीर वीर छबि को कहै ॥
उमड़ि चलो सुखसिंधु धन्यसुर जो लहै ॥१॥ सर-
सराग अनुराग बाजने बाजहीं ॥ अलिगण मंगल
साज सकल विधिसाजहीं ॥ गज मुकतन सो थार
भरिनमय सोहहीं ॥ लसत अमोलिक हार लाल
मन मोहहीं ॥२॥ पटभूषण सजिसीय छटासी रा-
चहीं ॥ लखि हरि वर घनश्याम मोरगण नाचहीं ॥
बन प्रमोद इत्यादिक द्वादश चार हैं ॥ कोटिन ब्र-
ह्मानन्द अनन्द विहार हैं ॥ ३॥ सुखद सोजमणि
जड़े सुबंगले साजही ॥ सबथल करि विश्राम राम
सिय राजही ॥ लाल लली मुसकानि बसीकर मंत्र
है ॥ भूषण वसन विचित्र मनोहर यंत्र है ॥४॥१॥
॥ हरगीत छन्द ॥ अलिगण अनूपम संग लमे स-
यान की छवि को लहैं ॥ लखिकाम कल कमनीय
कोटिन रतिरती सम किमि कहैं ॥ तन श्याम मर-
कत पद्म सियवर सखीगण लहि द्युति रली ॥मान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हुं अलौकिक कसौटी पर कनक श्री कसि वेचली ॥४॥ पुनि निरखि पुनि सियबर सुघर छवि छाकि छुमि मन मुदित भली ॥ अवलोकि दिनकर निकर जनु विकसित भई पंकज कली ॥ सुनि राग सह नाई परस्पर सबै हिलमिलि गावहीं ॥ श्री राम सीता सहित आनँद कंद अति सुख पावहीं ॥ ५ ॥ रघुबीर सरयू तीर जात अली भली लीला करैं ॥ सिय सहित दिनकर बंश भूषण निरखि हिय आनंद भरैं ॥ सुखपाल सुन्दर सुक्क कोटिन चन्द रबि छबि भाजहीं ॥ श्री राम सीता लसत तापर कोटि रति पति लाजहीं ॥ ६ ॥ अलकरण सोहावन बरषिघन बहुरूप रंग लखावहीं ॥ हरि देखि छबि घल घरन की परिकर सहित मन भावहीं ॥ बोलहिं विविध विधि मोर मदन मरोर अति सुख सो सने ॥ नाचहिं सुगति पर बोलि जिय रव कोकिला चातक घने ॥ ७ ॥ दोहा ॥ रतन भूमि सुन्दर सुखद विविध भांति जहँ घाट ॥ लाललली परिकर सहित शोभित भे सब ठाट ॥ २२ ॥ मनि मनि ते प्रतिबिम्ब करि द्विगुणित मिलैं अनंत ॥ जनु सरयू तट मोद लहि धारे रूप अनन्त ॥ २३ ॥ ॥ इति श्री राम रसिक गुणमणि विरचिते जलभूलने कनक भवनतः सरयू पुलिन गमनम नाम प्रथम स्तरंगः ॥ १ ॥ ॥ अथ सरयू शोभा ॥ राग काफी ॥

रतना करकर सोज सुपरिकर सोहहीं ॥ कोटिन रवि शशि मनहुं मुदित छवि मोहहीं ॥ दम्पति मृदु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुसुकाय सकल तन देखेऊ ॥ छैल छबीलो ध-
न्य भाग्य निज लेखेऊ ॥ ५ ॥ सोहत तान तरंग
सुन्दरी गावनी ॥ घटीघटा चहुँ ओर मोर मनभा
वनी ॥ खग अनूप बहुरूप बिबिधि विधि बोल-
हीं ॥ लहि सुख ब्रह्मानन्द मुदित मुनि डोलहीं ॥
॥ ६ ॥ लाल लली छबि देखत हिये हुलास सों ॥
विहंग रूप करि देवलसे जनु आस सों ॥ दिव्य
रतन मय फरश घाट सीढ़ी बनी ॥ मनि पुतली-
सी भली लली सोहें घनी ॥ ७ ॥ ललित लता तरु
सुमन सुअलि रव भावहीं ॥ मानहुँ सीता राम च-
न्द्र गुण गावहीं ॥ सुवरण मणि मय सेतु चारु
विधि कर बनो ॥ सरयू बीच अनूप कंज फूलो
मनो ॥ ८ ॥ छबिगण चारु मराल परम अप
मालहै ॥ हाटबाट बर बिरचित शोभादल अहै
॥ सरयू बीच सुपांति रतन महलावली ॥ वारपार
सुचि धाम दाम शोभा भली ॥ ९ ॥ चारि घाट
युगधार चारु कमलावली ॥ रसबस परम अनंद
वृन्द मोही अली ॥ पुरुष सदन कहुँ कहुँ युवतिन
के धाम हैं ॥ इन्द्रपुरी सुखधाम तदपि छबि छा
म हैं ॥ १० ॥ सुक पिक सारस मोर आदि चातक
घने ॥ सुघर कंगूरन बोलत सुधा सोहावने ॥ भु
वन पुंज अभिराम धाम पर वारिये ॥ काह इन्द्र
ब्रह्मादि महल सम धारिये ॥ ११ ॥ कबहूँ अवध
भुआल सभासद राजहीं ॥ राजसिरी सहभूप वृंद
छबि भ्राजहीं ॥ कबहुँ कुवँरि युतमात सकल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुख लेखहीं ॥ परमानन्द अनन्द सुकौतुक देखहीं ॥ २३ ॥ दोहा ॥ श्रीसरयू छवि को कहै महिमा अगम अपार ॥ मज्जत बिनु श्रम लहत जिय रघुवर सिय दरबार ॥ २४ ॥ ॥ इति श्रीराम रसिक सुगमणि विरचितं जलभूलने श्रीसरयूशोभा परिकर समाज भूषणालंकार सहित पुलिनमण्डली वर्णनो नाम द्वितीय तरंगः ॥ ॥ २ ॥ ॥ अथ जलयान वर्णन ॥ राग काफी ॥

घने बाजने जड़े दिव्य मणि सोहहीं ॥ जग मग जग मग मोरपंख मन मोहहीं ॥ पिनिस सिंह घोड़ हीर असित रवि चन्द्र से ॥ देखत मन फषि जात परम सुख कन्द से ॥ २३ ॥ अमित एकते एक सेत मणि साज हैं ॥ लालपीत सब रंगरंग छिरताज हैं ॥ कोउ मोतिन मे कंचन मणिमय जाल हैं ॥ खत सीप गजदंत मयंक समान हैं ॥ २४ ॥ मीनन की बहु बोहित सबविधि साजहीं ॥ हरित अबीरी धनी श्याममनि भ्राजहीं ॥ कतहुं रतनमय पलंग देखि मन मोहहीं ॥ तोशेखाने आदि खज़ाने सोहहीं ॥ २५ ॥ कहुं संध्यादिक साज सजे जलयान हैं ॥ पक्षीगण तहंकरत रामगुण गान हैं ॥ कहूं भावरस भरी अली मति माल हैं ॥ व्यंजन रचे विचित्र दिव्य पकवान हैं ॥ २६ ॥ नानारिक छत झालर मणिमय साजहीं ॥ मनहु चक्र शिशुमार चन्द्र रवि राजहीं ॥ सिंहासन मसनन्द फरश छवि खान के ॥ रतन अमोलिक लाल जड़े द्युति भान के

॥ २७ ॥ भाड़ फनूस विचित्र आदरश दुति लसी मानहुँ त्रिभुवन जीति परम सुखमा बसी ॥ कहुँ परदे जरतार लसत मणिकार के ॥ हिमगिरि धार कि छविरस सार बहारके ॥ २८॥ सुन्दर डोरि सुकेश वेस दुति दामिनी ॥ जड़ित पूतली खम्भ मनहुँ सुर कामिनी ॥ निकर कंज देवालगीर बहुजालि की ॥ दिपति पद्मिनी लियो जीति बहुभांति की ॥ २९॥ रविराशि प्रभाछिलान पिंजरन में टँगे ॥ पक्षीकल रव करत सुधारस सों पगे ॥ पानदान अतरादिक मणि मीने करे ॥ फूल चँगेर गुलाबपाश आदिक धरे ॥ २०॥ भयो कामछवि धामदौल शोभाघनी को बरणै सुखधाम जहाँ त्रिभुवनधनी ॥ कंचन कलशो लसै लालमणि ख्यात हैं ॥ जनु रविछवि को जीति निकर दरशात हैं ॥ २१॥ ठौर ठौर ध्वज लसे पताके जाल हैं ॥ जरीताल में बसन लसे मणि लाल हैं ॥ दिव्य अनूपम रूपजीति रवि छवि घनी ॥ पूरण ब्रह्मप्रकाश सु अद्भुत गति बनी ॥ २२ ॥ लखि विशाल जलयान सदाशिव भावनी ॥ सुरपति सदन सिहात निरखि छवि पावनी ॥ काम सरिस सजि केवट छवि कवि को कहै ॥ रविशशि सरिस प्रकाश परम सुखमा लहै ॥ २३॥ तिय निषाद रति सरिस कहूँ दुति दामिनी ॥ मणि पुतली सी लसति महागुण भामिनी ॥ बांकी भौं खंजन दृग अंजन गोरी हो ॥ कसे सुधर सुठिफेंट लिये मन चोरी हो ॥ २४॥ आयुध निज अनुरूप सजे मति मान हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बनि निषाद जनु बैल लसत जलयान हैं ॥ शोभासो किमि गाइये छवि जलयान की ॥ कोरिन शश प्रकाश राम जहँ जानकी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ नौका नाम अनन्त गुण छवि अनन्त घनसाज ॥ सुन मनिसो केहि विधि कहै लीला नित्य समाज ॥ २६ ॥
॥ ॥ इति श्री रामरसिक सुता मणि विरचितं जलभूलने नौकोपकरण वर्णनो नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥ ॥ अथ जलयान विहार
॥ राग काफी ॥ सो निषाद लै धाये हरिरुख पायकै ॥ छकत महा छवि मनहुं रंकनिधि धायकै ॥ लखिसो सरयू तीर दियो हरि मानहै ॥ जनक लली मिलिच ली अली करि मान है ॥ २६ ॥ सखासखी सब चढ़े रामसिय सुखमई ॥ सुमन वरषि चहुंओर मुदित जै जय भई ॥ शंख परवावज झांझ सलख सुनि तोप की ॥ भुवन विदित असवारी रघुमणि चोपकी ॥ ॥ २७ ॥ हरि हर विधि बहुसुमन व्योम झरिलावहीं ॥ चोबदार बरविरद नकीब सुनावहीं ॥ तड़ित चें दोवा जड़ित डोरि सुख केशकी ॥ सिंहासन छवि छन्न कोटि रविदेसकी ॥ २८ ॥ तकिया गादीसजी सरस समनन्द है ॥ तापर दंपति लसत सु दशरथ नन्द है ॥ दक्षिण प्यारेसखा लषण छबिसोहहीं ॥ बामभाग सियसाथ अली मन मोहहीं ॥ २९ ॥ हावभाव सबकरैं बसीकर मंत्रसी ॥ निरखि लड़ैती लालभई मति यंत्रसी ॥ रागरागिनी मधुर तान परि पूरिहैं ॥ नरनारिन के होत कोलाहल भूरिहैं ॥ ३० ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

॥ हरिगीत छन्द ॥ मनमोहहीं छवि जानकीवर निरखि सब दृग तोरहीं ॥ निजभाग्य बारम्बार कहि कहि कमल पर कर जोरहीं ॥ खरभर पर्यो सबकोउ चह्यो अभिलाष जो जेहि विधि चहे ॥ तब जानिरुख जलयान लै सु निषाद झांकी लै रहे ॥ ८ ॥ कौतुकी नाचहिं गावहीं कहुं अप्सरा गति आवहीं ॥ मनहरषि बारों भाग्य बहुबकसीस परम पठावहीं ॥ सो लेहि कंचन बोरि आशिष दै मुदित गुण गावहीं ॥ जोरी रहै चिरजीव नितनव सुख निरखि हम पावहीं ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ प्रभु आसन आसीन महाभगान शोभा निरखि ॥ नाचत कला प्रवीन हाव भाव हदुसाल करि ॥ १ ॥ सोहत परिकर साथ सम्बन्धम अनुपम हरत ॥ सो छवि किमि कहिजात दंपति रतिमति जे छके ॥ २ ॥ ॥ इतिश्री राम रसिक गुणमणि विरचितं जलझूलने सह समाज नौकोपरि आरूढ़ वर्णनोनाम चतुर्थ स्तरंगः ॥ ॥ ४ ॥ ॥ अथ आलीगणां नखसिख ॥ दोहा ॥ कोउ तन सरस गुलाब रद चंपकतन कोउ सोह ॥ कोउ कंज तन नयन वर कोउ हेरि जो मोह ॥ २६ ॥ ॥ एकादशी ॥ सुन्दर बदन मनोहर छवि की धाम हैं ॥ चन्द्र बदनि कोउ कंचन अंग अभिराम हैं ॥ बदन भाल रसाल रागाछवि लसिरही ॥ कनक कदलि दल मध्य श्याम बेनी लही ॥ १ ॥ चाप भौंह धारैन कुन्द दुति दांत हैं ॥ सखी सलोनी चन्द्रबदनि हरषात हैं ॥ अरुण अधरलय लरकन

मुख मुसक्यात हैं ॥ लजत लाल धुर चाप सुकुज-
लजात हैं ॥ ३२ ॥ बन्दी बेना तिलक विविधि भूषण
सजीं ॥ रतिरंभादिक ताहि देखि अतिशय लजीं ॥
श्रुति भूषण अनमोल कपोल विभात हैं ॥ सरसप-
स सुग रविकर जनु जलजात हैं ॥ ३३ ॥ चिबुकमध्य
सुचि नील बिन्दु इमि साजहीं ॥ कनक सिंहासन मा-
नहुं रघुबर राजहीं ॥ कंबु कण्ठ शुक चंचु नासिका
चारु हैं ॥ तामे जलज उदार हार सिंगारु हैं ॥ ३४ ॥
ललित चूंदरी रतन किनारी सजिरही ॥ दामिनि मा-
नहुं घेरि नखतगण छबिगही ॥ कर सनाल अरवि-
द विविधि भूषण सजीं ॥ कोटि कामिनी दाम दा-
मिनी दुतिलजीं ॥ ३५ ॥ चुरियाँ पहुंची आदि हेम
गण सों जड़ी ॥ रविमण्डल जगमगित जोति जनु
चित्तगड़ी ॥ हरित कंचुकी कुचन लसत जलजात सो
॥ बेलपत्र शिर शंभु गंगाजल पीतसो ॥ ३६ ॥ सुंदर
नाभि गंभीर अभीरस सो भरी ॥ राम सलोने लषण
सखन को वसिकरी ॥ त्रिबली तरुणि तरंग देखि मन
रमिरहा ॥ कटि बिलोकि म्रगराज हार बन सचिरहा
॥ ३७ ॥ लहँगा शुचि जरतार रतन शोभा महा ॥ म-
नहु सहित परिवेष सुदिनमणि छबिगहा ॥ रोमवली
उदोत यमुन छबि जाल की ॥ जानुरंभ विपरीति म-
नोहर लालकी ॥ ३८ ॥ नूपुर धुनि झनकार कोला-
हल सोहहीं ॥ मनहुं हंसगति जीति सुआलि र म-
मोहहीं ॥ भूषण अंगुरिन पीठ लालतल भावने
॥ जनु अर विंद लोभाय लग्यो अलि पावने ॥ ३९ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छैल छबीली बांकी चितवन हेरवहीं ॥ सकल सुमन शर वेधि स्ववस सब लेरवहीं ॥ योवन माती लसी लाल के मन बसी ॥ ताकि तिरीछे मैन मधुर करती हँसी ॥ ४०॥ महाराज शिरताज सुमन रुख पावहीं ॥ तिमि अंग रूप अनूप रूप दरसावहीं ॥ सजि अवतंस प्रशंस हंसगति राजहीं ॥ उपमा देत सकात भाली लाजहीं ॥ ४१॥ दोहा ॥ अलिगण छबि कबि को कहै जेहि बस युगुलकिशोर ॥ दम्पति लीला रासरस नित पीवत चितचोर ॥ २७॥ ॥ ७ ॥ ७ इति श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने आलीगण नखसिख वर्णनोनाम पंचम स्तरंग: ॥ ५॥ ॥ अथ सख्यगण छबि ॥ राग काफ़ी ॥ अति प्रवीण रसलीन सखा सुख भावहीं ॥ हास विलास नवीन रामरुख राखहीं ॥ सजे सुकलँगी पेंच पाग अनमोल हैं ॥ दिये तिरीछे ताज अनूपम लोल हैं ॥ ४२॥ मुकट रत्न मय सजत लजत लखि काम हैं ॥ कोऊ सजे शिर मोर सुमन अभिराम हैं ॥ चित्र विचित्र वसन पटू के जरकसी ॥ सजे पंचशर कमर मनोहर तरकसी ॥ ४३॥ बीरन सो मुख लाल दंत छबि यों लसै ॥ मानहु प्रात विभात सूर कर को हँसै ॥ पूरण लालतरंग प्रेम रस रास मैं ॥ प्यारे रूप अनूप सजे हरिपास मैं ॥ ४४॥ हँसनि मधुर मुसक्यान कामिनी मति हरैं ॥ छैल छबीले नैन सुधा बानी दरैं ॥ भूषण रत्न अनरूप अनूपम राजहीं ॥ कोटि कोटि रवि चंद मदन छबि लाजहीं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

॥४५॥ हरिगीत छन्द ॥ पूरण अलख रुचि रूपधा
री सखिसखा रघुनाथ के ॥ नित रहत हरि के पास
निशि दिन बनि अनूपम गाथ के ॥ जहं चहत जैसी
जानकी वर बनत तैसे रूप हैं ॥ कहुं सखा सखि बनि
लसत सखि कहुं सखा वेष अनूप हैं ॥ २०॥ वरक कहुं
जान विधान नाना भांति के भूषण लसैं ॥ कहुं ऋतु
बसन्त अनन्त सुखमा पाय मुद सिय वर हंसैं ॥
कहुं बाग वन चातक मयूरन सरस रस उपजावहीं ॥
कहुं चारुशीला शशिकलादिक सहज सुभग भाव
हीं ॥ २१॥ कहुं देवगण होय यान चढ़ि कर वर सु
मन वरसावहीं ॥ कहुं रासमें पूरण मनोहर चंद्रछ
वि दरशावहीं ॥ भूषण वसन मनहरण तन घन
श्याम बनि मन भावहीं ॥ हरिसंग विहार अपार
सुखमन बुद्धिपार न धावहीं ॥ २२ ॥ कहुं रामसिय
संग विविधि व्यंजन रुचिर भोग लगावहीं ॥ षट्रप
रसस्वाद अनादि सुख ब्रह्मादि दुर्लभ गावहीं ॥
नहि पलक न्यारे होत प्यारे ये युगल सरकार के ॥ इ
मि नर्म जानत मर्म सब हैं रूपराम विहार के ॥ २३॥
॥ दोहा ॥ नर्म सखन की छवि अगाम भोग विला
स अपार ॥ वेद न महिमा कहि सकत कविकिमि
पावै पार ॥ २८॥ कोटिन मनसिज मनहरैं सखा
नर्म रघुनाथ ॥ जिनके दरशन को खड़े सुर गण
शाकिन साथ ॥ २९॥ कुन्द इंदु वरदेह कोउ चंपक तन
छवि गेह ॥ विपुल रामलल श्याम छवि सुधि
भरिा सनै सनेह ॥ ३०॥ ॥ इति श्री राम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने सखागण स्रु-
विगुण वर्णनोनाम षष्ठमस्तरंगः ॥ ६ ॥ ॥ अथ
विविधि विहार ॥ रागकाफी ॥ मंगल मय जलयान
चहूँ दिशि सोहई ॥ जिनमें नाचतरंग रागधुनि
मोहई ॥ सीयराम भरतादिक मोदनिधान की ॥
होत आरती चहुँदिशि मंगल खानकी ॥ ४६ ॥ वि-
म्रलिखेसोलोग दरशि मगा ओहहीं ॥ हरि ह्वै रूप
अनूप सकल थल सोहहीं ॥ जसजाको अभिलाष
मनोरथ भावहीं ॥ ब्रह्मानन्द अनन्द अवध सुख
पावहीं ॥ ४७ ॥ अवध चहूँदिशि बसत परम अव-
तार हैं ॥ मंगल धाम विराजत राम अधार हैं ॥
निजनिज धामविलास हासमुख छावहीं ॥ दम्पति
लीला उदित मुदित गुण गावहीं ॥ ४८ ॥ भूले नि-
ज निज गेह देहसुधि कोकरैं ॥ मोहन मूरति लुभी
निमिष पलनहिं परैं ॥ सुमन सुगंधित अतर पान
सिरनेत हैं ॥ लालन के अनुकूल सखासखि देतहैं ॥
॥ ४९ ॥ महिमा अपरम्पार सखासखि की कहैं ॥
प्रभुसम विभव विलास अंतस्रुति किमिलहैं ॥ निशि
दिन विविधि सिंगार युगल सरकार के ॥ तिमि परि-
कर सब सजत साज एक तारके ॥ ५० ॥ हरित स्याम
कहुं पीतलाल सिंगारहीं ॥ रंग गुलाब अबीर बसन
मणिधारहीं ॥ फूलन के सब भूषण बसन बनावहीं
॥ विविधिरंग इकरंग छराछवि पावहीं ॥ ५१ ॥
कबहुं गुलाबी फूल सु नख सिख साजहीं ॥ पीतच-
मेली कुन्द कुसुम रंगराजहीं ॥ लोने लोने छैलगैल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहुँरोकहीं ॥ लैकर हानमहान अलिन कोरोकहीं ॥ ५२ ॥ मानचरित्र मेंदोउ दिशिनर्म मनावहीं ॥ कहिस्हु बैन रिझाय युगल सुखपावहीं ॥ कहूं नर्मके लालमान मन भावहीं ॥ परिकर करिकर हिये लगाय मनावहीं ॥ ५३ ॥ साम्राज शिरमौर सिया छवि मन बसी ॥ मुख्य चारु शीलादि अलीपति कहुँजसी ॥ चन्द्रकलादिक सखीघनी सुखमा सनी ॥ जनु मनोज की फौज वोजसो आनिठनी ॥ ५४ ॥ रामसीय दोय तिमिहि सखनदल तियलसे ॥ कोटिन रति छविधाम परस्पर मनफँसे ॥ महरानी महराज सिंहासन सोहहीं ॥ परिकर कारबर छत्र चमर धर मोहहीं ॥ ५५ ॥ दोउ दिशि छवि सिन्धु सरस सिंगारहैं ॥ कौतुक रचैं विहार अनेक प्रकारहैं ॥ एकएक कर मैनमैन करमेलहीं ॥ चौरासि दीवन आदि खेल कहुं खेलहीं ॥ ५६ ॥ ब्याहसाज कहुंसाजि सुमंगल गावहीं ॥ दम्पति भाँवरिभरैं सबै सुख पावहीं ॥ सकल सुरीसर जानि सुमन बरषाकरैं ॥ जयजय जय धुनिसाधि परम सुख उरधरैं ॥ ५७ ॥ लगे पिनिसि अनमोल निधा सुख पायकै ॥ नृपसुत संध्याकौं सबै हरषायकै ॥ तन अपार इतिताहि चाहिसब धावहीं ॥ देखि अनूपम रूप सबैं सुख पावहीं ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ लीला श्री रघुनाथ की बिमल विचित्र अपार ॥ नित नवमंगल मूलवर गुनमनि छवि आगार ॥ ३१ ॥ ७ ॥ ॥ ६ इतिश्री रामरसिक गुणमिण विरचितं जलझूलने सम्ना सखी संयुक्त प्यारेप्यारी विवि

थविहार लीला वर्णनो नाम सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥
॥ अथ शिशिर ॥ दोहा ॥ कछु विहार षट
ऋतु कहत लीला ललित अपार ॥ करत जनकजा
सखिसखा सुन्दर राज कुमार ॥ ३२ ॥ प्रति ऋतु की
जलयान लखि लाजत सुरपति भौन ॥ जहां जात ह
र्षाततहं सजे साज ऋतु तौन ॥ ३३ ॥ प्रथम शिशिर
वरणन करत तेहि अन्तर ऋतुराज ॥ यह सम्मत सत
काव्य को देखि लिख्यो शिरताज ॥ ३४ ॥ सुन्दरी छन्द
॥ छबि जगमगात मणिदीप जाल ॥ नवरतन
सजे परदे विशाल ॥ द्युति झाड़ फनूसन की अनन्त
॥ जगमगाति जोति बहुविधि लसन्त ॥ १ ॥ तहँ दि
व्य सिंहासन जोतिजाल ॥ आसीन सियावर रसिक
लाल ॥ ललना गणलिये सबनर्म संग ॥ बहु शिशि
र चरित रचिरहे रंग ॥ २ ॥ अस कहत मदन तहँ
जोरि हाथ ॥ होरी बहार यह लखिय नाथ ॥ मुदसखी
सखा सियपिय अनन्त ॥ उठि सकल हर्षि खेलत
वसन्त ॥ ३ ॥ वरषीत सुमन झरि होत चार ॥ सब
सजे पीत भूषण सिंगार ॥ डफ ढोल आदि बाजत
मृदंग ॥ मचि अति धमार गारी तरंग ॥ ४ ॥ अबला
चपलासी धरहिं धाय ॥ हाहा कराय छांड़हि वनाय
मचिरही तहाँ होहो सुफाग ॥ भरवोर भयेसब रंग
राग ॥ ५ ॥ तोमर छन्द ॥ कहुँभागि सखिगण जाहिं
॥ कहुँ नर्मदल छिपलाहिं ॥ करसेत लाल गुलाल
सखि कुचन मर्दत गाल ॥ १ ॥ पिचकान केसर रंग ॥
तरवतर कीन्हो अंग ॥ दियो सैन लक्ष्मण आय ॥ को

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नु भजि म बाहर जाय ॥ २॥ सुनिउठे लषण समेत ॥ लियोघेरि सिथियिरलेत ॥ कोउबोंद फूलन्वलाय ॥ दैताल डारीगाय ॥ ३॥ चलैं हमकले भोरंग ॥ घहरात डफ मिरदंग ॥ भोरी अबीर अतोल ॥ कुम कुमें चलत अमोल ॥ ४॥ लखिसिया चहुँदिशि रैन ॥ निज सखिन दीनोंसैन ॥ कोउजानि अधीरज होइ ॥ तुमको हमारी सोह ॥ ५॥ सबभरहु अंग अनन्द ॥ धरिलेहु आनन्द कन्द ॥ लैधसी रंगगुलाल ॥ सबरंगे लाल रसाल ॥ ६॥ सखिघेरि श्रीरघुनाथ ॥ सबबंधु के गहिहाथ ॥ रामशेर नयनन ऊटि ॥ लियो ललन के मन लूटि ॥ ७॥ लाईं पकरि निज गोल ॥ बोलैं विचित्रित बोल ॥ कहैं वीरता का कीन ॥ कहंगये सखाप्रवीन ॥ ८॥ कह लषण पाय प्रसंग ॥ ढांकहु सुअंचल अंग ॥ किये भरत रिपुहन सान ॥ हैं भेटये सुखदान ॥ ९॥ इमिवचन सुनत रसाल ॥ सब मुदित भे दैताल ॥ अलिगण सबैं मनभाय ॥ भूषण वसन पहिराय ॥ १०॥ कटि ते पिताम्बर छीन ॥ रचिनवल नारि नवीन ॥ सब भाय नाच नचाय ॥ सिय सखी मन हरषाय ॥११॥ अलि कहैं फगुवा देहु ॥ नहिंजान पैहौ गेहु ॥ हरि लीन दानद राज ॥ भरि लेहिगी सबसाज ॥ १२॥ ॥ दोहा ॥ यहिविधि नवल किशोरसो सियसखि होरी खेलि ॥ लाललली नूतन सजे छविरति मदन सकेलि ॥ ३५॥ ॥ इतिश्री राम रसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने शिशिर ऋतु अंतर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गत झूरी वसन्त वर्णनं नाम अष्टम स्तरंगः ॥ ८ ॥
॥ ९ ॥ हरिगीत छन्द ॥ जलयान पीत हिंडोल
फूल लतान करि वर सोहहीं ॥ तहँलाल लली रसा-
ल अलिगण सखासाज विमोहहीं ॥ कहुंकहुं क-
मलकलि कलित कहुँ मणि करित कर बर खंभहैं॥
कहुँ कीर कोकिल चारुचित्रित रतन के अस्तंभहैं॥
॥ २४॥ अतिपीत मणिगण डोरि ग्रंथित दामिनी
छविफबि रही॥ अद्भुत रतन घन सजत पटुली
सुरशशि द्युति ढबिरही॥ तापर सुमन सिंगारसजि ऋतु
राजसे सियपिय लसैं ॥ करसुमन धनुशार मधुर मू-
रति छविमनोभव कोहसैं ॥ २५॥ भूषण वसन मणि
लसनि तनधन कसनि दमनि छटाघनी ॥ भूलत
झुलाय वसंत गावहिं सखिसखा शोभा बनी ॥ बाजे
सोहावन मधुर बाजैं पीतमणि छबिजनु छनी ॥ अ-
लिमण सुमन सर वाटिका तहँ त्रिविधि मारुत गति
मनी ॥ २६॥ दोहा ॥ पीत सुमन भूषण वसन सिय
द्युतिपीत लसंत ॥ सखासखी रंगपीतमें सियवर
बनेवसन्त ॥ ३६॥ भूलत लालसली ललित सु-
खमा सहित अनन्त ॥ भावत चन्द्रकलादि गति
गावत मधुर वसन्त ॥ ३७॥ ॥ इति श्री
रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने ऋतु
वसन्त हिंडोल वर्णनंनाम नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥ ०॥ ०
॥ ० ॥ अथग्रीष्म ॥ तोमर छन्द ॥ कहुँराम छवि
घनश्याम ॥ लियेसखा सकल ललाम ॥ पैरैं सरस
सुहभाय ॥ सरयू पुलिन हरषाय ॥ २३॥ करतारदै

पिचकार ॥ जलउड़हि मनहुं फुहार ॥ जनु मदन रसबस हेत ॥ करसुमन भर शिरनेत ॥ २४॥ सखि सखा रसिक सुजान ॥ बनिजात कहुं जलयान ॥ कौउ बनि सिंहासन मात ॥ तेहिंबैठि हरि हरषात ॥ ॥२५॥ जबहोत अन्तरध्यान ॥ ढूंढ़तसकल जलयान ॥ होयजाय विरहविहाल ॥ पूछहिं ललनगहि व्याल ॥ २६॥ ढूढ़हिं कमलबन कुंज ॥ सरयूपुलिन खगपुंज ॥ हे पवन प्रिय सुखदैन ॥ कहुंलखे राजिव नैन ॥ २७॥ करुप्राणनाथ मिलाय ॥ हरुशोक पुंज विलाप ॥ खोजत सखीगण लाल ॥ व्है विरह विकल विहाल ॥ २८॥ जनुपरे वारिधि भौर ॥ चिंता मगन सबतौर ॥ भेप्रगट सहित सिंगार ॥ हरिकरत सखन पुकार ॥ २९॥ को सुनेसुधि तन नाहिं ॥ तबपास हरिचलि जाहिं ॥ लखि सखस विरह अधीन ॥ जनु तपत जलसोंमीन ॥ ३०॥ मुखचूमि करगहि लीन ॥ जिमि चित्रकोउ लिखिदीन ॥ खोले कमलदृग नर्म ॥ लखि ललन आनंद पर्म॥ ३१॥ सब पकरि हरिकर लीन ॥ कह प्राणप्रिय छलकीन ॥ करिविरह विकल निदान ॥ भे आपु अंतर्धान ॥ ३२॥ दोहा ॥ कस अन्तर पट होतहो अन्तर पट करिलीन ॥ अब निकसन की गैलनहिं छैल कियो आसीन ॥ ३३॥ कहांगये घनश्यामहो लागी विरहदवान ॥ वचनसजीवन बरषिके राखि लीजिये प्रान ॥ ३४॥ कहामीत गौनीतव्है अचरज सुहृद पषान ॥ मोहनप्रीत लगायके घायल करत

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निदान ॥४०॥ लहर जुलुफ कारीकहर लहरल देत
निशंक ॥ सुधामंत्र कहिज्यारये नातरु लगत क-
लंक ॥४१॥ श्याम सलोने कतकियो टोनेडीठ लगाय
॥ बिनदेखे तरसत नयन चैन रह्यो नहिंजाय ॥ ८
॥४२॥ प्रेम कटारी मारिके नैनसैन तरवार ॥ घाय-
लकरि घायल कियो अमन चाहिये यार ॥४३॥
अशन वसन भूषण सकल तबहित सज्यो रसा-
ल ॥ चहीन अन्तर पर कपटमोहन दृगरघलाल
॥४४॥ मैं बलिहारी नज़रकी परछाहीं परिजात
॥ विरह कटारीते सरस बिना दृश अकुलात ॥४५
अहो छबीले छैलवर श्याम सलोने गात ॥ क्यों
तरसायो दृशबिन मतिगति हरिहरि ख्यात ॥
॥४६॥ ललन सलोने लाड़िली असह विरह सं-
योग ॥ तरफरात चषदरश बिन जिमिजल मीन
वियोग ॥४७॥ गुणमणि धनिजन जानकी रा-
म लषण जेहिबोर ॥ इन्दुमुदित तेहिदरशि लख-
त जिमिनिशि चन्द्चकोर ॥४८॥ युगल कमल
पद अमलदल छुके सरस रस नैन ॥ गुणमणि
के श्रुति सींचिये सुधामधुर वर बैन ॥४९॥सिया
सहित अखिलखन के सुनिरघुनन्दन बैन ॥ सुधावच-
नकहि हर्षकिय सबको राजिवनैन ॥ ५०॥ हरिगी-
तछन्द ॥ जलयान मणिसे खम्भ फूल ललान करि
मन मोहहीं ॥ खसआदि परदे रचितमणि मुकतान
करि मनमोहहीं ॥ बहुभाइ सुमन अनूपकी झालरि
सुशोभा पावहीं ॥ तेहिमध्य कंज विचित्र मणि दीपक

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गिलास सोहावहीं ॥ २७ ॥ दीवारगीर विचित्र फूल-
न मणिन खंभन सोहहीं ॥ वरकमल अमल अनूप
की ज्ञासिते प्रभामन मोहहीं ॥ वरफरस सरस गुला
ब फूलन रचित रचना को कहैं ॥ तहँफूल डोल वि-
शाल परम रसाल सबविधि छबिलहैं ॥ २८ ॥ स्त-
म्भ चित्रित पुष्पमें जो मणिसरिस सोभावहीं ॥
कवि किमिकहै शोभा प्रसून जोमणिन मुकल-
जावहीं ॥ छूटहिं फुहारे जनुसितारे जानमे छवि
लखिमरैं ॥ सुन्दर सुगन्धन व्यजन चहुंदिशि विवि-
धिविधि चामर ढरैं ॥ २९ ॥ श्री जनकजा रघुनाथ तहँ
श्रिंगार फूल सोहावहीं ॥ छवि कौन दम्पति की कहै
रतिकाम कोटि लजावहीं ॥ सोइसाज साजे सखिस-
खा सियराम हिलिमिलि गावहीं ॥ गुणमणि सखे
सखि युगल शोभा परम आनंद पावहीं ॥ ३० ॥ ॥
॥ दोहा ॥ नितनव मंगल मूलवर लीलाललित वि-
हार ॥ जो समुझैं सज्जन सुमति लहैं अनन्द अपार
॥ ५१ ॥ बंगले सुमन सुरंगवर विमल चहूंदिशि चार
॥ जलविहार ग्रीषम सुखद ॥ सजिसिय वर शिंगार
॥ ५२ ॥ चलत फुहारे झपिरहे खसखाने जलथान
॥ ग्रीषम में सियवर रचत सुमन आभूषण खान॥
॥ ५३ ॥ ॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि
विरचितं जलझूलने ग्रीषमऋतु विहार वर्णननाम
दशमस्तरंग ॥ १० ॥ ॥ अथ पावस ॥ दोहा ॥
कहिआये पावसप्रथम पुनि ऋतु को क्रमजानि ॥
कहत कछू संक्षेपसों सुनहु मुदित रस खानि ॥ ५४ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विविध साज जलयान को रचनारच्यो नवीन ॥ कं-
जसिंहासन मध्यहरि दल गण नर्म प्रवीण ॥ ५५ ॥
॥ हरिगीत छन्द ॥ बरषत सुधाबानी मनोहर राम
सिय घन दामिनी ॥ सखि सखा अनुपम मोरगण
अतिमुदित मनलाहि छविघनी ॥ नृत्यत मनोहर
सुन्दरी लखि शशिवधू छविलाजहीं ॥ बहु हाव
भाव कटाक्ष भूषण वसन मणिगण गजहीं ॥ २१ ॥
नाचहिं विविधि विधि कौतुकी कौतुक मनोहर
सोकरैं ॥ लखिवन्धु सखन समेत कृपानिकेत
आनंद उरभरैं ॥ लहिप्रात करिकरि क्रिया जुरे स-
माजसाज महानहैं ॥ लागे सोहावन होनगान विधा-
न तान सोहान हैं ॥ २२ ॥ रुख जानि हरिलागे लड़ा-
वन विहँग चित्र विचित्र हैं ॥ कहुँ तीव्र तीतिर विपु-
ल बुलबुल लालमाल चरित्र हैं ॥ कहुँ माहिष मेढ़
आदि कहुँ गजराज साज लड़ावहीं ॥ चीते शिकार
उदार कहुँ शूकरन कूकर धावहीं ॥ २३ ॥ कहुँ लड़हिं
सिंहन सिंह कहुँ बरमाल युद्ध सोहावहीं ॥ कहुँ मृगा
आदिक लड़हिं लखि सियराम अतिमन भावहीं ॥
जुरे कुही शाहीन बहरी आदि पाक्षिन पै परैं ॥ उड़ि
कै गगन गहि लेत पक्षिन आनि हरि सन्मुख करैं
॥ २४ ॥ निशि जानि नाटक होनलागे विविधि विधि
छवि खानकी ॥ सुनि सुनि विदूषक वैन मन सवचैन
रहस निधान के ॥ देखहि मनोहर सीय सखिन समेत
चरित सोहावने ॥ झाकहिं झरोखन यान सों शोभा
सकल मन भावने ॥ २५ ॥ यहि चरित अधिकारी सकल

6552.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्री अवध श्यामी जानिये ॥ महलनि कुँअरियुत माधु कहुँ श्रीराज माज वखानिये ॥ यहनित्य रूपअनूप अद्भुत परम प्रिय सुखदान हैं ॥ अतिसुधा मानीमा धुरी जन छकत रसिक सुजान हैं ॥ २६॥ दोहा ॥ पा वस जलझूलन सघन सरस सुमंगल मूल ॥ सीता पति परिकर सहित सोहत सरयू कूल ॥ ५६॥ राजत विविधि हिंडोलने सियवरको सिंगार ॥ सखा सखी जलयान में झूलत गाय मलार ॥ ५७ ॥ उद्दीपन सिंगार के बोलत विहंग सचैन ॥ सुनि मोहत परि कर सहित सियापिय शोभा ऐन ॥ ५८ ॥ ॥ इति श्री रामरसिक सुणमणि विरचितं जलझूलने वर्षा ऋतु विहार वर्णननाम एकादश स्तरंगः ॥ ११ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ अथ शरद ॥ हरिगीत छन्द ॥ जलयान रास विधान रचि निशि शरद गतिनहिं भानकी ॥ मणि दिव्य वटतरु कमल आसन असित दलदुति छानकी ॥ तेहिमध्य दम्पति अपर दलगण सखि सखा शोभावसी ॥ तहँ रासथल रमणीय चित्रित शशि प्रभा पूरण लसी ॥ २७ ॥ वहुदिव्य बाजे नृ- त्यसाजे प्रिया प्रीतम गावहीं ॥ करताल चाल मरा ल थेइथेइ भावबहु उपजावहीं ॥ मुरली मनोहर मधुर धुनिसुनि सकल विधिकी सुधिहरी ॥ श्रीचा शीला शशिकला सहजादि सुनिभईं बावरी ॥ ॥ ॥ २८ ॥ वर अमल जलसरयू मनोहर विसद पट भू षण लसी ॥ जनुपरा प्रेमा नारि तनधरि आयहरि के उर बसी ॥ कहुँ नर्म गणगत रासमण्डल सखि

सखा कहुं मण्डली ॥ कहुं नटत नृत्त साजिसिंगार्न सखासंग लीन्हेंआली ॥ २९ ॥ कोउ क्षण सखा सखि मध्य न्नृत रामसिय शोभावनी ॥ बहु हाव भाव वि-चित्र नाना करिलसत त्रिभुवन धनी ॥ क्षण जनक-जा रघुनाथ बहुविधि रामरूप सँवारिकै ॥ मोहने प-ढ़िकै मंत्रमोहे मनहुं जादूडारिकै ॥ ३० ॥ कोउ क्षण सखासखि परस्पर रघुबीर न्नृत्त जानकी ॥ यहिभां-ति रासविलास बहुविधि बरनि कृपानिधानकी ॥ य-हँ रहस मण्डलसीयसियपियसखिसखा गतिजानकी ॥ ॥ सुरपक्ष शिवब्रह्मादि की नहिं गति कहांहै आनकी ॥ ३१ ॥ ओसखीवेष स्वरूपधरि सिंगार षोड़स चारुहैं ते करत हरिअनुकूल कौतुक रासरैन विहारहैं ॥ मन सखिसखा अधिकार यह सुख औरको नहिं दीजिये ॥ गुणमणि सखेरचि रासमण्डल रसिक रससों पी-जिये ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ रहसहेत आलिगण कियो उ-ज्जलवर सिंगार ॥ छविसमुद्र सो किमिलहैं कोटिसु-धारस सार ॥ ५९ ॥ जनकलली छवि अति रली ॰ त्रिभुवन को सिंगार ॥ कोटिन रतिशशिछवि निदरि लसत विशद मणिहार ॥ ६० ॥ ॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलझूलने शरद ॰ ऋतु प्रथम रास वर्णनं नाम द्वादश स्तरंगः ॥ १२ ॥

॥ ७ ॥ अथ श्री जानकी नखशिख ॥ रागकाफी ॥

तलरेखा प्रतिविम्ब उमादिक नागरी ॥ पुञ्ज नखत नखजोति सियाइमि आगरी ॥ अरुण चरण तल मंजुल लाली आतिलसे ॥ कोटिप्रात छविभानु लाल

गाया को हँसै ॥ ५९ ॥ एंड़ी अरुण मनोहर कोहर
रंगदैरें ॥ मानहुं प्रेम अनन्त कटोरी वशिकरैं ॥ गोरे
गुल्फलली के सुखमा मूलहैं ॥ मनमोहन सियपियके
अति अनकूल हैं ॥ ६० ॥ मोरवा मंजु विचित्र मनोह
र चारहैं ॥ नूपुर छवि मनहरण लसत सिंगारहैं ॥
सियपद अंगुरी मंजुल ललित विराजहीं ॥ मनहुमद
न शरपंच पंच छवि छाजहीं ॥ ६१ ॥ चरण कमल पाम
ड़ सुफूंदा फविरहे ॥ मानहु मधुकर लेत सरसरस छवि
गहे ॥ कदलि जानु विपरीत रंभदुति करसुधा ॥ गति
हंसक की छीनि राज्हंसक सुधा ॥ ६२ ॥ कटि सूक्ष
म मृगराज जीति अतिखीन है ॥ परसत लाल उ-
रात शंक आसीन हैं ॥ कलित अमोलिक मंजु बलि
त लहंगा फवै ॥ त्रिभुवन की दुति छीनि कोटि रवि
छविदवै ॥ ६३ ॥ रोमावलि जनुधार नाभिसर सोंगई
॥ मनहुं मदन शिवहेत सांगकर मेलई ॥ त्रिवली
तरुण तरंग कोटिरति सोहनी ॥ मनहुँ बसीकर मंत्र
लसत मनमोहनी ॥ ६४ ॥ कंचुकि चित्रित चारु उ-
रोजन झमिफवै ॥ मनहुँ शम्भुधारे ज्ञानमनोभव मों
दवै ॥ हीर जलजमणि हार लालछवि योंलसी ॥ मन
हुं शम्भु शिर धार त्रिवेणी दुतिबसी ॥ ६५ ॥ केकी
कंठकपोत सुधाबानी सनी ॥ मनहुं सुधाकर कोटि
जात सुखमाघनी ॥ पाणिकमल दलमंजु अंगुरियां
राजहीं ॥ लखिरति रूप अनूप रमादिक लाजहीं ॥
॥ ६६ ॥ पहुँची पानसुबाहु बाजुबंद छविछनी ॥ म-
नहुं दामिनी कोटिदमकि सुखमाघनी ॥ ठोढ़ी विम्ब

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रसाल नीलमणि बिंदुहै ॥ जनु सिंगार अनूप लसत बिच इन्दुहै ॥ ६७ ॥ अरुण अधर रतनार सो रद यों पगे ॥ विकसित सीप अनूप मुक्त जनु रलिरंगे ॥ नासा बेसर जलज अधर बिच राजहीं ॥ मनहुँ कीर ले दाड़िम बीजसु लाजहीं ॥ ६८ ॥ नासा अमल रसाल कीर छवि छीजहै ॥ बेसर मोतीचंचु सुदाड़िम बीजहै ॥ दर्पण दिव्य कपोल हालको मनहरै ॥ मनहुँ शंख छविछीनि अनूपम द्युतिधरै ॥ ६९ ॥ श्रुति भूषण रमणीय अनूपम राजहीं ॥ मनहुं मदन दिग विजय चक्रयुग साजहीं ॥ भृकुटी कुटिल कमान नैनशर मेलसे ॥ ताको बिन रघुबीर बिकल मनमें बसे ॥ ७० ॥ टीका ललित ललाट मेलमणि यों सजै ॥ दिनमणि मनहुँ प्रभात प्रभा लखि कै लजै ॥ बाजु मुकतादिक लौं सुघारि कपोल हैं ॥ जनु मरकत मणि गुथे नक्षत्र अमोल हैं ॥ ७१ ॥ मंजुमांग सिंदूर पूर छवि जागिरही ॥ मनहुं रामकी छविरति सिय अति पगिरही ॥ हेमशिखरते बेनी उरबिच यों लसी ॥ युगमहेश के मध्य शेषछबि जनु बसी ॥ ७२ ॥ दिव्य रतन मैं जड़ित चूँदरी अँगहै ॥ अलख अनूपम अद्भुत शोभित रंगहै ॥ सोछवि कोकवि कहै शेष मतिरंग है ॥ होति निरंजन जोति छटा छवि पंगहै ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ जनक नन्दिनी सुछवि तव कोकवि कहै विसूरि ॥ मनमोहन मनवस किये जो सर्वस छविमूरि ॥ ६१ ॥ ॥ इतिश्री रामरसिक त्रुरामणि विरचिते जलभूलने शरद अन्तर श्री

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जनकजा नखशिख वर्णनं नाम त्रयोदश स्तरंगः ॥
॥ १३ ॥ ॥ अथ श्री दशरथ नन्दन नखशिख ॥ राग॰
काफी ॥ अंकुशादि छवि अरुण चरण तलयों ल-
से ॥ लाल जलज द्युति छीनि दामिनी जनहँसे ॥ नख
मणिसरस सोहात अनूपम राजही ॥ कोटिकोटि
शिशुमार चक्र छविलाजही ॥ ७४ ॥ कंजकली र-
मणीय अंगुरियां सोहनी ॥ बसीकरण जनुमंत्र अ-
धिक छवि मोहनी ॥ मणिगण नूपुरदिव्य चरणछ-
बियों लसी ॥ मनहुँ श्यामघन मध्य दमकि दामिनि
बसी ॥ ७५ ॥ युगलजंघ विपरीत रंभशोभा धरै ॥
मत्तकरी रमणीय हंसगति को हरै ॥ कटिकेहरि मं-
जीर अनूप रसाल की ॥ अमीसरोवर लसत नाभि
सर लालकी ॥ ७६ ॥ त्रिभुवन को सिंगार धार रोमा
वली ॥ लखिद्युति राजकुमार सियामोही अली ॥
उर बैजंती लसत चारु बनमाल है ॥ मनहुँ परीपरि
वेष तड़ित घनजाल है ॥ ७७ ॥ उरश्रीवत्स सोहात
मनोहर मंजु है ॥ केयूरन अवुराग अनूपम कंज है
॥ भुजविशाल रमणीय पाणिवर राजहीं ॥ अंगदा-
दि लखिभूषण मनमथ लाजहीं ॥ ७८ ॥ कड़ेजड़ा
कजड़े सुकंकण छविलसी ॥ रतन अमोलिक लाल
मूंदरी मनबसी ॥ करतल रेख अनूप अरुणता न-
खलसै ॥ मंत्रवसीकर मात सुधाकी छबिबसै ॥ ७९ ॥
कंजकली दलखिलीं अँगुरियां श्यामकी ॥ मनहुं
मोहनी मंत्र लसित मणिदामकी ॥ करमुरली कीध-
रनि बरणि कवि को सकै ॥ नटवर वेष अनूप देखि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सियसखि छकै ॥ ८१॥ कंबुकण्ठ कल अद्भुतग्रीवा लालकी ॥ उपमा किमि कहिजाय निरखि छवि जाल की ॥ दोड़ी बिंद रसाल लालकी लसिरही ॥ जनक नन्दिनी देखि सुमति रतिवासि रही॥८२॥ मुखमयंक निन्दति बुलाक मुकता लसै ॥ जनु वारिजपै सुधाविन्द शोभाहँसै ॥ नासा की सरिकरै कौनकेहि रीति सो ॥ नासाकेसम लख्यो नासिका प्रीतिसो ॥ ८२॥ चिक्कनगोल कपोल सहनद्युति यों लसी ॥ मनहु मोहनी मंत्र प्रभा पूरण शसी ॥ नैनसैन की सैन किया घायल घनी ॥ मनहुँ कामशर कोटि जीति लीन्हे अनी ॥ ८३॥ भ्रकुटी धनु शरनैन सैन अंजन करे ॥ मनहुं मदन दिगविजय हेत रोक्षा धरे ॥ ज़ुलफैं सुमन सुगंध साजि जलयानपै ॥ भई अलीगण सकल देखि कतलानपै ॥ ८४॥ मकराकृत कुण्डलन चारु शोभाधरे ॥ मनो मोहनी डारिमदन मन बसकरे ॥ चर्च्चित चन्दन तिलक ललित कणिकालसै ॥ मानहुँ मुख परिवेष चन्द्र मण्डल हँसै ॥ ८५॥ सेतमुकट सिर सोहत भूपकिशोर के॥ कोटिचन्द उपमान मन्द भव तोरके ॥ जामा जड़ित जड़ाव सुमणिगण जाल को॥ मणिगण जोति विशाल मजेउर माल को ॥ ॥८६॥ देखिपटूक भटूक छटूके उरभये ॥ भूरिभानु राशि जोतिजीति छविकोलये ॥ मोतिन के गजरे नृपपति हिय यों हलैं॥ जनुमरालगण शुक्रचन्द्र मंडलमलैं ॥ ८७॥ सखासखी गणामध्य लसत सियराम हैं॥ शारदघटा जनुघिरी दामिनी दाम हैं ॥ दियेयुगल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गलबांह एक संग छवि लसी ॥ अनुतमाल तरुमांह हेमलातिका वसी ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ इमिजोड़ी सरकार साजि कोटि काम छबिजीति ॥ सुमन सेत कर वर छड़ी लिये रुमाल सप्रीति ॥ ९२ ॥ ॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलभूलने श्री रघुनन्दन नखशिख शरद शृंगार वर्णनंनाम चतुर्दश तरंगः ॥ १४ ॥ ॥ अथ द्वितीयरास ॥ दोहा ॥ कोटिभानु शशि देखिदुति हारिकरत मनुहार ॥ मोहनरूप अनूप हरि लाजत कोटिनमार ॥ ९३ ॥ राग काफी ॥ घनआनंद जलयान विशद बैठक सभा ॥ गये सेत सिंगार साजि हरि तेहिसभा ॥ चंद जोति जगमगित परम छबि छाईहो ॥ कोटिचन्द छबि मन्द होति अधिकाई हो ॥ ८९ ॥ मनहुं आरती कोटिनराति लै आईहैं ॥ सजिनाचत अलिपुंज बजाय वधाई हैं ॥ सजेसेत जलयान रवाइस छूटहीं ॥ मनहुं सुमन झरिकैं देवसुख लूटहीं ॥ ९० ॥ गंजसितारे बाण उड़ेनभ दुतिवसी ॥ थुक्र चहूं दिशि मनहुं चंन्द सुखमा लसी ॥ छकित भये सब मुदित देखि कोशलधनी ॥ दोऊ दिशि सजिखड़े परस्पर छबिघनी ॥ ९१ ॥ रतन बांसुरी सजी कोटि शशि दुतिहरी ॥ जनु अति ब्रह्मप्रकाश सखासरिव बशिकरी ॥ सिया सखिन तन लस्यो ललन दिशि लषण के ॥ भरत लषण रिपुदवन लख्यो तन सखन के ॥ ९२ ॥ होनलगे बहु नाट्य विविधि कौतुक जहां ॥ नैनसैन परिहास बैन रसमें तहां ॥ लैबंशी करसधुर मनोहर टेरऊ ॥ मनो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मोहनी मंत्रडारि हरिहेरैक ॥ ६३ ॥ भये प्रेम बश स-
कल महाछबि जालकी ॥ अद्भुत झांकी देखि ला-
डिली लालकी ॥ छकित चराचर चकित जकितलखि
माधुरी ॥ चित्रलिखे चहुंओर मनहुं लहिमाधुरी ॥
॥ ६४ ॥ दोहा ॥ मणिगण में प्रतिबिंब जनु चहुंदिशि
रास सोहात ॥ लीला अलख समाजवर लिखिन-
हिं जातलखात ॥ ६५ ॥ छपै ॥ कोटिन रविसस
प्रभा कोटिरति सरिस भ्रमलता ॥ चन्द्रजोति रवि
जोति कहालखि जोति प्रबलता ॥ कोटिन काम
समान कोटिरवि सुधा माधुरी ॥ युगल रूपछबि
देखि करत उपमा न लाजुरी ॥ युगमणि आनंद
कन्दघन कैसहु त्रिपित न होत मन ॥ श्रीराम कुंवर
रघुबंशमणि सियोदरश निजजानि प्रान ॥ २ ॥ ✤ ॥
॥ दोहा ॥ शरदसेत सिंगार नट नटवर रूप अनूप ॥
रमनि बसन भूषण लसन असन मदन रति रूप ॥
॥ ६५ ॥ शरद चांदनी रासरचि बिशद ज्ञान अनुकू-
ल ॥ सखासखी सियवर सजे सेत आभूषण फूल
॥ ६६ ॥ युगमणि कीन्हीं आरती कृपा युगल उर
धारि ॥ तन मन धन वारयो सकल धनिदोउ रूपनि-
हारि ॥ ६७ ॥ रामरहस रससिंधु वर लीला छवि सु-
खखान ॥ यान जानकी जान है सखासखिन की
प्रान ॥ ६८ ॥ ब्रह्मलोक वैकुण्ठ वर हरिपुर कह कै-
लाश ॥ सियपिय करत बिलास जहं परम सुखद
सुखरास ॥ ६९ ॥ ॥ इतिश्री रामरसिक
युगमणि विरचितं जलभूलाने शरदऋतु द्वितीय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रास वर्णनं नाम पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥ ७ ॥
॥ अथ हेमंत ॥ हरिगीत छन्द ॥ जलयान ऋतुहेमंत की शोभामहा कोकहि सकैं ॥ वरहेमसय मीना-मणिन के काम लखि सुरपति थकैं ॥ चहुँओर घ-न्दन वार चित्रित मणिन खम्भ विराजहीं ॥ ध्वज कलश चित्रित रचित मण्डप विविधि विधि छवि छाजहीं ॥ ३३ ॥ कहि को सकै सामां विवाह विधान छवि मुनिवर छकै ॥ कहुँ कलश कलसे लसे चारु विताल कविनाहिं कहि सकै ॥ चहुँओर मणिमुकतान की झालर लरैं मनवसि करैं ॥ मणि दीप रविशशि जोति चन्द अनूप की छवि अपलिहरैं ॥ ३४ ॥ कोम-ल बिछौने सजी सेजैं कनकवसन रसाल हैं ॥ वर अतर आले लहिमसाले मुदित मनभव लाल हैं ॥ सखि गानतान विधान मंगल बाजने बहु बाजहीं ॥ जो निरखि सुरगन्धर्व कन्या हरषि हि-य सब लाजहीं ॥ ३५ ॥ वरमधुर मूरति युगल ओ-ढी विविधि साज सिंगारि के ॥ भांवरि भरैं सियपिय परस्पर जातरति पति वारि के ॥ मणिगण निछा-वरिहोन लागी अयाचक याचक किये ॥ तहँमांगि युगलमणि रामसियसो भक्तिवर अनुपम लिये ॥ ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ ऋतुहेमन्त अनन्तसुख सिय हरि भांवरि देत ॥ दुरनि मुरनि सकुचनि हँसनि कसनि चित्तहरि लेत ॥ ७० ॥ मणि मण्डप मलि बिम्ब लखि चकित छकित नरनारि ॥ झांकी बांकी व्याहछवि इकटक मुदित निहारि ॥ ७१ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

॥ इति श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जल
भूलने हेमंत प्रथम विवाह वर्णननाम षोडशस्तरं-
गः ॥१६॥ ० ॥ दोहा ॥ सरस निशा भोजनकरत
दम्पति सहित समाज ॥ आनंद हाँस विलास सुख
लखितरसत सुरराज ॥ ७२॥ रैनसैन जलयान में
सकल चैन सामान ॥ निजनिज थलसब आयनित
करत सैन सुखदान ॥७३॥ पुनि प्रभात नित्त
क्रिया करि भूषण बसन सँवारि ॥ सह परिकर र-
घुवंश मणि हरषे सभा निहारि ॥७४॥ सजिसमा-
ज छठयें दिवस आवत कनक निकेत ॥ करत स-
हा मंगल सकल वरहप्रति तियन समेत ॥ ७५ ॥
॥ ० ॥ अथ अष्टयाम ॥ दोहा ॥ प्रथम दरश श्री
रंगसुनि धंधुसखन सोंनेह ॥ क्रिया साधि गुरुबंदि
पुनि जातमात पितु गेह ॥ ७६ ॥ भोजन पहर
द्वितीय में सुनिबहु तानतरंग ॥ कछुक बेर आरा-
म हरि करत जानकी संग ॥ ७७ ॥ याम तीसरे स-
खन मिलि मेवादिक वर खाय ॥ अश्व गजादिक
विहंग तर देखत बाग सोहाय ॥ ७८ ॥ चौथे पहर
पोशाक सजि सखासखी गणसाथ ॥ बन प्रमोद
भोरमोद नित जात सिया रघुनाथ ॥ ७९ ॥ भूषण
वसन संवारि वर सबविधि करि सिंगार ॥ याम पाँच
में रासरचि करत रहस्य अपार ॥ ८० ॥ छठेयामहरि
कनक वरह प्रविशत सखा सुगेह ॥ विविधि केलि
दम्पति करत पूरणसने सनेह ॥ ८१ ॥ याम सातयें
मंजरी छविसुख शोभा ऐन ॥ लखहिं महामुद युग

ल छवि प्रेमपियासे नैन ॥ ८२ ॥ करकमलन अठपें
पहर कमल नयन पददावे ॥ गावहिं रोग सोहावने
सियाराम छविपागि ॥ ८३ ॥ ॥ इति अष्टयाम ॥
॥ दोहा ॥ अष्टयाम को ध्यान जन जो करिहैं चित
लाय ॥ पराप्रेम सो पाइहैं मंगल मोद बढ़ाय ॥ ८४
॥ सुरमंगल सुन्दर महा सोहत जहाँ हमेश ॥ गा-
वत लहत अनन्द कहि सकत न शारद शेष ॥ ८५ ॥
रसिक चसक करधारिहैं रुचिउर माल रसाल ॥ म-
न वाञ्छित देहैं सदा मुदित लाड़िली लाल ॥ ८६ ॥
रामसिया अभिराम पद ताहिलाभ याहि देह ॥
जो रहस्य यह धारिहैं लीला सहित सनेह ॥ ८७ ॥
योग यज्ञ कोटिन करें तनतपि कसे शरीर ॥ राम
रास अधिकार बिन मिलें न श्री रघुबीर ॥ ८८ ॥
चातिक रतिअति घनविषे शशिलखि मुदित च
कोर ॥ इमि हरि रसबस नितकरैं लखौ युगल
किशोर ॥ ८९ ॥ रोलाछन्द ॥ युगल नामसों नेह
करे सतसंग रसिकबर ॥ ग्रंथभावना परै सुनै मुनि
नेह ध्यानपर ॥ लखे अखिल परिपूर रामसिय अ
ष्टयाम धन ॥ शिव हनुमत व्यासादि कह्यो यह त-
त्व शिरोमणि ॥ ९० ॥ रविमूरति श्रीराम रासयह ह
दे प्रकासै ॥ तव साकेत सोहाय सदाहरि संग विला
सै ॥ षोड़श वर्ष किशोर काम कोटिन लखिलाजै ॥
हरिसंग रूप अनूप तेजछबि विभव विराजै ॥ अष्ट
पहर हरिसंग रंग आनंद विलासी ॥ रघुवंशी सब
मर्मसखा मंगल छवि राशी ॥ तजिकै जगत असार

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तब हरिपद मन लावै ॥ गुणमणि लहिसाकेत बहु
रि जग जन्म न पावै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ उनइससै एकैस
लखि विक्रम वर्षप्रमाण ॥ आश्विन शुक्ल विजय
सदा दशमी दिनशशि जान ॥ ९० ॥ तेहिदिन सिय
पिय शुभचरित जलझूलन सुखखान ॥ ज्ञानखानि
काशीपुरी गुणमणि कियो बखान ॥ ९१॥ सुकवि
जानकी राम मम हनुमत कियो सहाय ॥ रसिकन
हित सुखसिंधु मथि लियोसुधा हरषाय ॥ ९२॥ ॐ
॥ ७ ॥ इतिश्री रामरसिक गुणमणि विरचितं
जलझूलने रसिक रहस्य मह अष्टयाम वर्णन नाम
सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥ ॥ रोलाछन्द ॥ संतकृपा
ते प्रथम राजपायो गुरुपाहीं ॥ संतकृपा ते भई प्रीति
सीतावर माहीं ॥ श्री महराज धिराज चक्रवर्ती कुल
जाये ॥ संतगुरू की कृपा मोहिप्रभु सखालखाये ॥
॥२२॥ संतभक्तिते भये दशौं अवतार सोहाये ॥ सं
तकृपा फलचारि मुकटमणि दशरथ पाये ॥ वरणौं
तेहि केहिभांति संत करुणानिधि आगर ॥ सन्त
कृपाते कियो ग्रंथपूरो सुखसागर ॥ २३ ॥ ॥ इति
श्री रामरसिक गुणमणि विरचितं जलझूलने संतम
भाव वर्णनो नाम अष्टादश स्तरंगः ॥ १८ ॥ ॐ ॥

शुभमिती आषाढ़ शुक्लासप्तमी
गुरुवासरे समाप्तिमगात
शुभम्भूयात ॥

हस्ताक्षर महाबीर प्रसाद त्रिपाठी अयोध्या वासी

संवत १९ ३६ विक्रम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सारा विचारमान शुद्धपद सकेहैं असार शुद्ध कर दिया

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	४	तोपित	तपित
२	२२	बीत	बेत
३	१२	असन	हसनि
३	२५	मत्विक	सात्विक
४	२	विविधि	विविध
४	६	विविधि	विविध
५	२	पुनि	पुनि पुनि
६	४	विविधि	विविध
७	२९	बाजने	बाजडे
७	१०	पंख	पंखि
८	१५	ताल	तार
८	२०	कहै	कहै लहै
९	१८	मुख	मुकेश
९	२३	लखन	ललन
१०	२०	हर	मनोहारी
११	११	घि	विविध
११	१२	गन	नग
११	१५	पीत	पांत
१०	२०	रोम	रोमा
१२	५	अंग	अनरूप
१२	१८	विचित्र	विचित्रित

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज-खू-२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	८	वन	वनि
१३	२५	गशि	गुनमणि
१५	४	लालमान	मानलाल
१५	५	परिकरि	पकरि पकरि
१६	२३	सेन	लेत
१८	१२	झूलत	झूलन
१९	१५	मणा	अलिगण
२०	२३	मन	बसोहहीं
२०	२४	झालरि	झालरैं
२१	४	कि	विसाल
२४	५	राम	रामरूप
२४	५	ने	मोहनी
२६	१८	सेष	सेस
२७	१७	केयूर	केयूरन
२८	८	सहन	सहज
२९	२१	लख्यो	लख्यौ
३०	१०	रवि	रति
३०	१३	मान	मन
३०	१४	सिंगारनट	डर
३३	२	रोग	राग
३३	१३	श्री	सियरघुवीर
३३	२०	यह	निज

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

किशोर दबेके ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri